मनुष्यता

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरः–

1. कवि ने केसी मृत्यु को सुमृत्यु कहा है?

उत्तरः– जो मनुष्य अपना जीवन दूसरों के लिए समर्पित कर देता हे ऐसे मनुष्य को मरने के बाद भी लोग उसे याद करते है ऐसा मनुष्य मर कर भी अपने कर्मो के द्वारा सबकी याद में बना रहता है ऐसे मनुष्य की मृत्यु को भी लोग सुमृत्यु कहते है।

2. उदार व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकती है?

उत्तरः– जिसकी कहानियॉ पुस्तकों में लिखी जाती है, जिसको जन्म देकर प्रथ्वी भी अपने आप को धन्य समझती है, पूरी सृष्टि के लोग पूजनीय मानते है जो सारे संसार में एकता ओर अखण्डता की भावना फैलाता है। वही व्यक्ति उदार कहलाने का अधिकारी होता है।

3. **कवि ने दधीचि, कर्ण आदि महान व्यक्तियों का उदाहरण देकर 'मनुष्यता' के लिए क्या संदेश दिया है?**

उत्तरः– कवि ने दधीचि, कर्ण आदि का उदाहरण देकर मनुष्यों को यह संदेश दिया है कि इन लोगों ने अपने जीवन में सदैव परोपकार की भावना रखी, और खुशी–खुशी अपना जीवन दूसरों के लिए, संसार की भलाई के लिए समर्पित कर दिया। इसी कारण इन्हें लोग आज भी याद करते है और इनकी पूजनीय मानते है इसी प्रकार हमें भी अपने जीवन में इनकी तरह परोपकार की भावना रखनी चाहिए और आवश्यकता पढने पर अपना जीवन भी संसार की भलाई के लिए समर्पित कर देना चाहिए यही मनुष्यता का सबसे बडा गुण है।

4. कवि ने किन पंक्तियों में यह व्यक्त किया है कि हमें गर्व रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए?

उत्तरः– कवि ने निम्नलिखित पंक्तियों में यह भाव व्यक्त किया है कि हमें गर्व–रहित जीवन व्यतीत करना चाहिए।

'रहो न भूल के कभी मदांध तुच्छ वित में,

सनाथ जान आपकों करो न गर्व चित्त में,

अनाथ कौन है यहॉ? त्रिलोकनाथ साथ है,

दयालु दीनबंधु के बडे विशाल हाथ है,

अतीव भाग्यहीन है अधीर भाव जो करे,

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरें।

5. **'मनुष्य मात्र बंधु है' से आप क्या समझते है स्पष्ट कीजिए।**

उत्तरः– कवि मैथिलीशरण गुप्त जी कहते है कि इस संसार के सभी मनुष्य आपस में भाई–भाई है सबके पिता स्वयं भू मनु हैं ऐसा हमारे वेदों ने प्रमाणित किया हैं कि जब प्रलय हुई थी तब केवल मनु और उनकी पत्नि सृष्टा ही इस प्रथ्वी पर बचे थे उन्ही के द्वारा पुनः मानव की सृष्टी हुई इसी कारण हम मनु के अंश और मनुष्य कहलाते है। इन नाते से हम सब आपस में भाई–भाई है।

6. **कवि ने सबको एक होकर चलने की प्रेरणा क्यों दी है?**

उत्तरः– कवि मैथिलीशरण गुप्त जी मनुष्यता कविता में सभी लोगों को एक होकर चलने की प्रेरणा देते है क्यों कि एकता में बहुत बडी शक्ति है इतिहास गवाह है कि जिस देश समाज और परिवार के नागरिकों में एकता के भव होते है वह देश समाज और परिवार सबसे अधिक उन्नतिकरता है इसलिए कवि ने कहा है कि जिस मनुष्य के अंदर अखण्डता ओर एकता के भव होते है वही मनुष्य सबसे बडा परोपकारी होता है।

7. व्यक्ति को किस प्रकार का जीवन व्यतीत करता चाहिए?

उत्तरः– मनुष्यता विता के माध्यम से कवि ने समझाया है कि हमें अपने पूर्वजों के द्वारा बताए हुए सही रास्तों पर चलना चाहिए जीवन में आने वाले कष्टों और परेशानियों को साहस पूर्वक सामना करते हुए आगे बढना चाहिए अपनी उत्तनि के साथ साथ दूसरों की उन्नति के बारे में भी सोचना चाहिए कभी – भी किसी धर्म का अनादर नहीं करना चाहिए और भेद–भाव की भावना नहीं रखनी चाहिए। सदैव परोपकार की भावना के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिए।

8. **मनुष्यता कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?**

उत्तरः– प्रकृति के अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में चेतना शक्ति सबसे अधिक होती है वह अपना ही नहीं औरों के हित–अहित का ख्याल रखने में सक्षम है पशु केवल अपने–अपने लिए चरने में समर्थ होते है, किंतु मनुष्य औरो के लिए भी कुछ कर सकता इसलिए मनुष्यों को सदैव अपने और अपनों से पहले दूसरे के हित का चिंतन करना चाहिए। मनुष्य में ऐसे गुण होने चाहिए जिनके कारण वह मृत्यु के बाद भी लोगों की याद में बना रहें। अतः हमें सदैव परोपकार के साथ अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए क्योंकि यही मनुष्यता का सबसे बडा लक्षण है।